

# दक्षिण एशिया: सादगी में पेचीदगी

एक महान अंगरेज़ कवि, विलियम ब्लेक, ने एक बार कहा था, "यदि धारणा के द्वारों की शुद्धी की जाए, तो सब जैसा वास्तव में है, वैसे ही मनुष्य के सामने प्रकट होगा, अनंत।" सब से पहले तो कुछ बुनियादी जानकारी होना ज़रूरी है। दक्षिण एशिया दुनिया का एक बहुत ही अद्वितीय और विविध हिस्सा माना जाता है। हिमालय की उन्नत चोटियों से लेकर हिंद महासागर की अथाह गहराइयों तक, और अरब सागर के जर्जर पानी से लेकर बंगाल की खाड़ी के पवित्र जल तक, यह क्षेत्र दक्षिण एशिया कहलाता है। इस क्षेत्र में नेपाल, पाकिस्तान, बंगलादेश, भारत, भूटान, और श्री लंका के राष्ट्रों को शामिल किया जाता है। अपनी भौगोलिक विविधता, सांस्कृतिक विशेषताओं, और समृद्ध इतिहास की वजह से दुनिया का यह अंश ने हमेशा से ही लोगों में जिज्ञासा जगाई है। लेकिन अमरीकी लोगों के दिमाग में दक्षिण एशिया के बारे में बहुत ग़लतफहमियाँ हैं। चलिए 4 सबसे बड़ी ग़लतफहमियों को देखें और दूर करें।

## *दक्षिण एशिया के लोग या तो हिन्दू हैं, या मुस्लिम*

इस पंक्ति में ज़्यादा सच्चाई नहीं है। बहुत अमरीकी लोग का यह मानना है कि दक्षिण एशिया के लोग या तो हिन्दू धर्म को मानते हैं, या फिर इस्लाम को मानते हैं। यह धरना पूरी तरह से सही नहीं है। बहुत लोगों को यह मालूम नहीं है कि श्री लंका, जो दक्षिण एशिया का हिस्सा है, में सत्तर प्रतिशत लोग बौद्ध धर्म को मानते हैं<sup>1</sup>। इस के अलावा अगर विश्व के प्रमुख धर्मों के बारे में सोचा जाए तो यह स्पष्ट है कि दक्षिण एशिया में धार्मिक विविधता की कोई सीमा नहीं है। हिन्दू, इस्लाम, और बौद्ध धर्मों के साथ-साथ इसाई, जैन, और सिख धर्म मानने वालों भी संख्या भी काफ़ी बड़ी है। अगर मुल्कों के हिसाब से देखा जाए तो, भारत और नेपाल में प्रमुख धर्म शायद हिन्दू, पाकिस्तान और बंगलादेश में इस्लाम, भूटान और श्री लंका में बौद्ध है। वास्तव में हिन्दू, जैन, सिख, और बौद्ध धर्मों की शुरुवात हुई ही दक्षिण एशिया में थी।

<sup>1</sup> <http://www.statistics.gov.lk/home.asp>

## *दक्षिण एशिया के रहने वाले सब लोग गरीब हैं*

वैसे तो देखा जाए तो अंकित मूल्य पर यह बात बिलकुल सच है। दक्षिण एशिया दुनिया के दो सबसे दीन हिस्सों में से है। कहा जाता है कि दक्षिण एशिया के चालीस प्रतिशत लोग अधिक गरीबी में रहते हैं<sup>2</sup>। लेकिन अगर इस का गहराई में विचार किया जाए, तो कुछ विपरीत तथ्य सामने आते हैं। असल में भारत अर्थव्यवस्थिक यानी कि क्रय शक्ति के रूप से दुनिया में चौथे स्थान पर है। और तो और भारत का सकल घरेलू उत्पाद (जी. डी. पी.) दुनिया के सबसे तेज़ी से बढ़ते हुए जी. डी. पी. में से एक है। वर्ल्ड बैंक का मानना है कि अगले कुछ सालों में भारत का जी. डी. पी. चौगुना हो पहुंचेगा। हाँ, दक्षिण एशिया में बहुत लोग गरीबी में जी रहे हैं, लेकिन ऐसे भी लोग हैं जो कि अत्यंत समृद्धि में ऐश कर रहे हैं। दुनिया के सब से अमीर लोगों में से दो लोग दक्षिण एशिया के हैं, मुकेश अम्बानी, और लक्ष्मी मित्तल। इन लोगों की अमीरी अमरीकी लोगों की भी सोच के बाहर है। दक्षिण एशिया के मध्यम वर्ग के लोग भी आज कल सेल फ़ोन इस्तेमाल करते हैं, बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ चलते हैं, और महँगे-महँगे कपडे पहनते हैं। फ़र्क सिर्फ़ इतना है कि दक्षिण एशिया में इन्तेहाई अमीरी के साथ इन्तेहाई गरीबी भी है।

## *दक्षिण एशिया के लोग बहुत ही वहमी हैं*

दक्षिण एशिया के बहुत से वहम, अंधविश्वास, जो भी कहिये, सुनने में बहुत अजीब लगते हैं। क्योंकि दक्षिण एशिया का इतिहास रहस्यवादी और प्राच्य माना जाता है, यहाँ के रिवाज़ और वहम भी हमें कुछ अजीब से लगते हैं। जैसे कि तेरह को अशुभ मानना, या फिर काली बिल्ली के रास्ता काटने पर मुड़ का घर लौट जाना, सुनने में बहुत अटपटी लगती हैं। लेकिन यह अलग-अलग विश्वास दुनिया के हर कोने में मौजूद हैं। आयरिश लोगों के अपने विश्वास हैं, जापानी लोगों के अपने, और रूसी लोगों के अपने। हाँ यह सुनने में शायद अजीब लगते हैं, लेकिन यहाँ के लोगों के लिए यह एक प्रकार से नियमित ही हैं। वास्तव में बहुत सारे इन "वहमों" के वैज्ञानिक आधार भी हैं। उदहारण के माध्यम पर: बहुत सारे भारतीय घरानों में बच्चे के खाने को तौलिये या कागज़ से न ढकने को अवशगुन माना जाता है। लेकिन अगर उनके तर्क तो देखा जाए, कि बच्चे के खाने को ढकने से उस में मखियाँ नहीं बैठेंगी और खाने का संदूषण नहीं होगा, तो यह एहसास

<sup>2</sup> <http://iresearch.worldbank.org/PovcalNet/povDuplic.html>

होता है कि यह "अन्धविश्वास" आखिरकार अँधा नहीं है। कहते हैं कि लोगों को डराना पूर्वजों का उन्हें विज्ञान सिखाने का तरीका था।

*दक्षिण एशिया में हिंदी सिर्फ हिन्दू धर्म के लोग बोलते हैं, और उर्दू सिर्फ मुसलमान बोलते हैं*

हिंदी और उर्दू, दोनों भाषाओं का जन्म एक साथ हुआ था। अंग्रेजों के आने से पहले, इन दो बोलियों में फ़र्क नहीं किया जाता था। क्योंकि यह दो भाषाएँ हिंदुस्तान कहे जाने वाले क्षेत्र में बोली जाती थीं, इसे हिन्दुस्तानी के नाम से जाना जाता था। कई भाषाविद आज भी हिंदी और उर्दू को एक ही भाषा के दो उपभाषाएँ मानते हैं। और क्यों न मानें, बोल-चाल के भाषा में इन दोनों में अंतर बताना लगभग नामुमकिन है। जब तक कि यह भाषाएँ ऊँचे रेगिस्टर पर न बोली जाएँ इन में फ़र्क बोलने वाले भी नहीं बता सकते। आम बोलचाल में इन की शब्दावली ही नहीं, लेकिन व्याकरण की संरचना भी एक सी है। तो मज़े की बात यह है कि आम हिन्दू और मुस्लिम जानते भी नहीं हैं कि वे कब हिंदी बोल रहे हैं, और कब उर्दू। हाँ, इन दो भाषाओं की लिपि में ज़मीन-आसमान का फ़र्क है। उर्दू अरबी की तरह दाएँ से बाएँ लिखी जाती है, और हिंदी संस्कृत को तरह बाएँ से दाएँ लिखी जाती है। क्योंकि बोलचाल में फ़र्क बहुत कम है, यह भी कहना मुश्किल है कि दक्षिण एशिया के किस मुल्क में कौन सी भाषा का प्रयोग किया जाता है। यह वर्गीकरण करने में राजनीति और सरकारी इरादों का बहुत बड़ा हाथ है। इस प्रभाव की वजह से कहा जाता है कि पाकिस्तान और बंगलादेश में उर्दू और हिंदुस्तान में हिंदी बोली जाती है। एक और बात यहाँ पर कहना ज़रूरी है। दक्षिण एशिया में, अगर सही प्रकार से गिना जाए तो हज़ारों बोलियाँ बोली जाती हैं: हिंदी, उर्दू, नेपाली, अंग्रेज़ी, बंगाली, पंजाबी, तमिल, इत्यादि।

जैसा विलियम ब्लेक ने कहा है कि किसी भी चीज़ कि असली तस्वीर यानी कि उसकी अनंत गुणवत्ता देखने के लिए पहले अपनी दिमाग़ की ऐनक को साफ़ करना बहुत ज़रूरी है, वैसे ही दक्षिण एशिया की पेचीदगी, खूबसूरती और समस्याओं को समझने के लिए पहले ग़लतफ़हमियों को मिटाना ज़रूरी है। दक्षिण एशिया जैसा सांस्कृतिक तौर पर विविध, और आंतरिक तौर पर एकजुट क्षेत्र शायद ही दुनिया में कहीं और है।